



श्री गणेशाय नमो ॥ ॥ बृहस्पति
वाच ॥ सरस्वती नमस्त्यामि चतुर्ना
हस्तं दिवं स्थितां ॥ केशवस्त्यामि
देवि रत्नाहस्तां वरप्रदा ॥ १ ॥ ऐं हूं मंत्र

यांचैव द्विकारस्य प्रियासदा मति
दा वरदांचैव कुमति ध्वंसकारिणी ॥
॥ सूपकारा लंबा मेज्ञानतिमिरायहा ॥ मोक्षप्रदा
श्रुभानित्यां श्रुभगाशां भनप्रिया ॥ ३ ॥ सदा
परित्या कुरुनिनी श्रुती वस्तां मनीज वा

आदित्य मण्डु लेली ना प्रन मा भिजन
प्रिया ॥ ५॥ जौ राग कर जगदीया भक्त जे
अविनाशिनि ॥ १॥ इति स म कस्तुता देवी
वागीशो न महात्मना ॥ ५॥ आत्मानं दर्श
यामास सरदी न्दुस म प्रभं ॥ श्री सरस्वत्य

वाच ॥ वरं वृणुष्व भद्र ते यत्ने म नृ सिव त ते
॥ ५॥ इति स म कस्तुता देवी
प्रसन्नय दिभे देवी दिवाज्ञान प्रदीयता ॥
श्री सरस्वत्युवाच ॥ दत्तं ते निर्मल ज्ञानं कु

मतिश्च यस्यकारकं ॥ ५ ॥ सा त्रेकानि न
येन तस्या मासूवंति नरोत्तमाः ॥ ६ ॥ अंते
परमं ज्ञानममृतं व्यसकर्म ॥ ७ ॥ कवित्वं
मत्प्रसादेन प्रापुर्वन्ति मनोज्ञतः ॥ त्रिसंध्यं
प्रयातो भुत्वा यस्तो व्रणं तेन हः ॥ ८ ॥

तस्य कुंठे सदा वासं कुर्यात् ॥ भिनसं ह
यः ॥ ९ ॥ ॥ इति श्रीरुद्रस्य त्रिकुंतं नर
त्तं तिलो व्रं स वृत्तं ॥
नि रवीतं श्री श्री श्री ॥ १० ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ १ ॥ तौ ह वाही
मधुना नि क ॥ २ ॥ तौ ह वाही
सं रज ॥ ३ ॥ तौ ह वाही
वाही ॥ ४ ॥ तौ ह वाही

ॐ ॥ १ ॥ दीना कथा ती वनय कथा
ती प ॥ २ ॥ नन ॥ ३ ॥ वनय न ॥ ४ ॥
ही मा ॥ ५ ॥ तौ ह वाही
५ ॥ ॥ वा ॥ ॥ जि नि पित नि ॥ १ ॥
॥ १ ॥

॥३॥ किं ता न नृपि च वराह नृपी
रुद्रा रुद्रा नी बरख जति मे ३
धनी दय न नृपी नी रुद्रम्
॥३॥ रत्ना रुद्रा नी वरख जति मे ३

रुद्रा नी रुद्रा नी वरख जति मे ३
न नृपी नी वरख जति मे ३
॥३॥ रत्ना रुद्रा नी वरख जति मे ३
न नृपी नी वरख जति मे ३

३॥५॥
स्य रूपी जत बूढ़ रूपि मूद्र ॥ ६॥
वृक्ष स्य रूपी नृपति स्य रूपी जहा
मूर्ति रूपी विद्या ॥ अत्र दूध नरा
रुक्मिणी विद्या ॥ ७॥ ॥ श्री विद्या

पानी बह्म विद्या का ती क
सप्रमाथी विद्या प्रमाथी का
मा ही नाभी दामर का ना
मा मूद्रा ॥ १०॥ श्री विद्या

श्री गणेशाय नमः ॥ १ ॥ का न
रूपी नमः ॥ २ ॥ का न
विद्वत्ता ॥ ३ ॥ का न
श्री गणेशाय नमः ॥ ४ ॥ का न



द्विष्यन्त्याय वसुधैव कुटुम्बकम्
न सो न भूय न तन् न च दत्तं न च

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
शर्व्वं त्वं कासि दधी ध्रुव
शिव दूपायः नमः शिवाय

ममप्रतीतिः कुरुते
दिनामस्तुते दक्षिण
पश्चिमदिशामुक्तादि

पायःसमाप्तमनासः
मोक्षनामस्तुते कुरुते
कामस्तुते कुरुते

दुष्प्रपि दाना ॥ ४॥

उनिडाकु ॥ गोत्रो या ॥ १॥

चलना न हि वलना ॥ १॥ ऐस

लायता ॥ ॥ चल चल वल
ना ॥ ॥ तो ते ॥

संव प्रति नाम का या व

गण्डकेशोदितगण्डकेश
जनपायिप्रणकारी

रामचंद्र

ASHA ARCHIVES

४४२

गण्डकेशोदितगण्डकेश







ASHA ARCHIVES

842

1915